International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(4): 33-35

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 33-35
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 24-05-2019
Accepted: 28-06-2019

पिंकी देशराज
पीएच.डी. दर्शनशास्त्रा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

Correspondence
पिंकी देशराज
पीएच.डी. दर्शनशास्त्रा विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

संस्कृत भाषा की पत्रा पत्रिाकाओं की परम्पराः वर्तमान संदर्भ में

पिंकी देशराज

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा की पत्रा पत्रिाकाओं की परम्परा – वर्तमान संदर्भ में अध्ययन करते हुए सबसे पहले पत्रा पत्रिाकाओं के बारे में जानना अति आवश्यक है। पत्रा–पत्रिाकाएं मानव समाज की दिशा–निर्देशिका मानी जाती है समाज के भीतर घटती घटनाओं से लेकर परिवेश की समझ उत्पन्न करने का कार्य करती है।

पत्रा–पत्रिाकाओं का मूल उद्देश्य सदैव जनता की जागृति और जनता तक विचारों का सही संप्रेषण करना रहा हैं।

महात्मा गाँधे जी की पंक्तियाँ है : समाचार पत्रा का प्रथम उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। द्वितीय उद्देश्य : जनता को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। जनता में वांछनीय भावनाओं की जागृति करना है। तृतीय उद्देश्य – सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।

पत्रा और पत्रिाकाओं ने इन उद्देश्यों को अपनाते हुए आरंम्भ से ही भारतीयों के हित के लिए विचार को जागृत करने का कार्य किया।

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीन एवं समृभाषा : (संस्कृत) भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की एक धर्मिक भाषा है। इसे देववाणी, अर्थात देवों द्वारा बोली जाने वाली भाषा भी कहा जाता है एवं सुरभारती भी कहा जाता है, संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत एक हिंद–आर्य भाषा है, जो हिन्द–यूरोपीय भाषा परिवार की एक शाखा है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ जैसे हिन्दी, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली, आदि इसी से उत्पन्न हुई है इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बाजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। संस्कृत में वैदिक धर्म से संबंधि लगभग सभी धर्मग्रंथ लिखे गये है।

बौद धर्म विशेषकर महायान तथा जैनमत के भी कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संस्कृत में लिखे गये है। आज भी हिन्दू धर्म के अधिकतर यज्ञ और पूजा संस्कृत में ही होती है।

संस्कृत भाषा का इतिहास बहुत पुराना है वर्तमान समय में प्राप्त सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ ङ्गग्वेद है जो कम से कम 2500 ई॰ पू॰ की रचना है।

संस्कृत भाषा की विशेषताएँ : संस्कृत विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक (ग्रंथ) वेद की भाषा है इसलिए इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में कभी किसी संशय की संभावना नहीं है।

संस्कृत भाषा की पत्रा पत्रिाकाओं की परम्परा – प्राचीन काल से चली आ रही है वर्तमान समय की बात अगर कि जाए तो वर्तमान युग एक विज्ञान युग है। कलपुर्जो का युग है, लैपटॉप मोबाईल का युग है। विज्ञान की कृपा से समूचा देश क्या विदेश भी सिकुड़कर हमारी ऊँगलियो पर आ गया है वर्तमान संदर्भ में गूगल से सर्च करके हर प्रकार की खबरे हम तक पहुंच जाती है, कहा जा सकता है कि पत्रा पत्रिाकाएं कहो या समाचार पत्रा दोनों एक ही बात है। यह हमारे रोज की दिनचर्या के लिए महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गई हैं। प्रातः काल से हर किसी को पत्रा पत्रिाकाओं, समाचार का इंतजार रहता है या यूं कहे कि जानकारी हमें पत्रा पत्रिाकाओं से ही प्राप्त होती है हमें हर प्रकार की जानकारी इससे मिलती है जैसे कि शिक्षा, मनोरंजन, साहित्य, आदि की प्रमुख खबर पत्रा–पत्रिाकाओं में प्रकाशित होती है ये हमारे वर्तमान जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग सा बन गया है।

- संस्कृत की सुस्पष्ट व्याकरण और वर्णमाला की वैज्ञानिकता के कारण सर्वश्रेष्ठता भी स्वयं सिद है।
- सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्य की ध्नी होने से इसकी महत्ता भी निर्विवाद है।
- संस्कृत को देव भाषा माना जाता है।

- संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा भी है इसलिए इसका नाम संस्कृत है।

केवल संस्कृत ही एकमात्रा भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वाले के नाम पर नहीं किया गया है। संस्कृत को संस्कारित करने वालों को कोई साधरण भाषाविद्ववान नहीं बल्कि महर्षि पाणिनी, महर्षि कात्यायन, और योगशास्त्रा के प्रणेता महर्षि पतंजलि है। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं का भाषा में समाविष्ट किया है यही इस भाषा का रहस्य है।

संस्कृत एक भाषा मात्रा नहीं : संस्कृत भाषा के बारे में कहा जाए कि संस्कृत केवल एक भाषा मात्रा नहीं है। अपितु संस्कृत एक विचार है। संस्कृत एक संस्कृति है एक संस्कार है, संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है, वसुधैवकुटुम्बकम् की भावना है।

संस्कृत की पत्रा–पत्रिाका का विश्लेषण

सुर्ध्माः सुर्ध्मा नामक यह अखबार विश्व का एक मात्रा संस्कृत दैनिक समाचार पत्रा है। मैसूर के संस्कृत विद्वान वरदराज आयंगर ने 14 जुलाई 1970 में सुर्ध्मा की शुरूआत की। उनके लिए यह एक मिशन की तरह था। वह चाहते थे कि इसके जरिए संस्कृत का प्रचार प्रसार हो और लोगों में संस्कृत का ज्ञान बढ़े। 1990 में उनकी मृत्यु के बाद यह मिशन उनके बेटे ने चलाया आज सुर्ध्मा के बीस हजार ग्राहक है जिनमें भारत और विदेश के लोग भी शामिल है।

संस्कृत ममजरी : संस्कृत ममजरी एक अन्तर्राष्ट्रीय त्रौमासिकी शोधपत्रिाका हे जो कि दिल्ली संस्कृत अकादमी से प्रकाशित होती हैं
दिल्ली संस्कृत अकादमी से प्रकाशित यह एक शोध पत्रिाका है। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषा में संस्कृत के शोधपत्रा प्रकाशित होते है।

समाचार चंद्रिका : भवानी चरण बन्धेपाध्याय द्वारा सम्पादित तथा कोलकाता से प्रकाशित एक साप्ताहिक पत्रिाका थी। यह पत्रिाका 1822 में पहली बार प्रकाशित हुई थीं समाचार चंद्रिका के सम्पादक भवानी चरण बन्धेपाध्याय पहले सम्वाद कौमुदी के सम्पादक थे वहां जब उनका राजा राममोहन के विचारों में मतभेद हो गया तो उन्होंने समाचार चन्द्रिका पत्रिाका आरम्भ की।
समाचार पत्रिाका के सम्पादक भवानीचरण प्रभावशाली व्यक्ति तथा गद्य साहित्य के प्रणेताओं में से एक थे इसका परिणाम यह हुआ कि धेरे–धेरे पत्रिाका की प्रसार संख्या में वृदि हुई और 1829 ई॰ के अप्रैल माह से यह सप्ताह में दो दिन प्रकाशित होना आरम्भ हो गई।

गुरुकुल शोध भारती : गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड से प्रकाशित षाण्मासिक शोध पत्रिाका है। यह प्रमुख रूप से वेद, वैदिक, एवं लौकिक साहित्य, र्ध्म, दर्शन, संस्कृति, योग, आयुर्वेद, तथा अन्य प्राच्यविध से सम्बन्धित शोधपरक आलेखों को प्रकाशित करने के लिए कृतसंकल्प हैं यह प्राच्यविधओं में निहित ज्ञान विज्ञान एवं साहित्यिक मौलिक अनुसंधनों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद हैं अनुसन्धन के क्षेत्राों में हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित होने वाली स्तरीय शोध पत्रिाका है।

संस्कृत–संवाद : संस्कृत–संवादः पाक्षिक समाचार पत्रा, देहलीतः प्रकाशमानमस्ति। अस्य समाचार पत्रास्य प्रवेशांकस्य विमोचनं 2011 तमे वर्षे जुलाईमासस्य प्रथमें दिनांके राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थास्य तत्कालीनैः कुलपतिभिः प्रो. राधवल्लभ त्रिापाठी महोदयैः एवं भारतीयसंस्कृत पत्रा कारसंघस्य अध्यक्षैः पमश्रीविभूषितैः डॉ. रमाकान्त शुक्ल महोदयै : कृतम्

संस्कृत–वाड्मयी : यह संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रकाशित होती है। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, तथा संस्कृत भाषा में लिखित शोध पत्रा प्रकाशित होते है।

सागरिका : यह डॉ॰ हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर से प्रकाशित होती है। इसमें केवल संस्कृत की नवीन पुस्तकों की समीक्षाये भी प्रकाशित होती है।

संस्कृत–विमर्श : यह वार्षिक शोध पत्रिाका है। जिसका प्रकाशन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय दिल्ली से होता है अब इसको आनलाइन भी पढ़ा जा सकता है।

संस्कृतसृजना (त्रौमासिक ई–पत्रिाका) : यह लखनऊ से प्रकाशित ISSN पत्रिाका है। यह जनवीर 2015 ई. से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। इसकी सम्पादिका श्रीमती उषा किरण हैं। इस पत्रिाका को ऑनलाइन भी पढ़ा जा सकता है। यहाँ संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में लिखित लेख प्रकाशित होते है तथापि संस्कृत की प्रमुखता होती है। संस्कृतक्षेत्रा लेख का केन्द्र बिन्दु होता है। इसमें कविता, गज़ल यात्राावृतांत, व्रत, पर्व त्यौहार, दर्शनीय स्थानीय स्थानों आदि पर लेख के अतिरिक्त पहेली, कहानी, हास्य, व्यंग्य, विद्वानों का साक्षात्कार, विद्वानों का जीवन परिचय, संस्कृत पत्रा–पत्रिाकाओं का परिचय, संस्कृत की नवीन पुस्तकों की समीक्षा, देश दुनिया से संचालित संस्कृत विद्यालय, महाविद्यालयों का संक्षिप्त परिचय रोजगार सम्बन्धी समाचार, विभिन्न संस्थाओं में होने वाली संस्कृत संभाषण शिविरों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं की सूचना, संस्कृत संवर्ध्न तथा संरक्षण पर लिखित आलेख विभिन्न शोध पत्रिाकाओं में प्रकाशित शोध पत्राों के विषय में जानकारी, इन्टरनेट पर उपलब्ध संस्कृत सामग्रीयों के विषय में जानकारी प्रकाशित की जाती है। इसके नवलेखन को प्राथमिकता दी जाती है तथा मौलिक लेखन को ही स्थान दिया जाता है। इसके शास्त्रीय शोधपत्रा प्रकाशित नहीं किये जाते। संस्कृत–सर्जना पत्रिाका का उद्देश्य संस्कृत भाषा का प्रचार प्रसार करना है।

दिव्यज्योति : संस्थापितम् 1956 प्रधनसंम्पादक : आचार्य केशव शर्मा राष्ट्रपतिसम्मानितः, हिमाचल प्रदेश पंजाब, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, मध्यप्रदेश, राजस्थान महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश शासन–स्वीकृत केंद्रशासनपुरस्कृतम् संस्कृस्य साहित्य मासिकम्। दिल्ली संस्कृत अकादमी पुरस्कृतम्

राष्ट्रर्ध्म : इसके संस्थापक पं. दीनदयाल उपाध्याय है यह संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित होती है।

जार्वी त्रौमासिक : यह पूरी उड़ीसा से प्रकाशित प्छ प्राप्त ई–शोध पत्रिाका है इसके सम्पादक श्री विपिन कुमार झा है इसमें हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत में शोधपत्रा प्रकाशित होते है।
निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हे कि संस्कृत भाषा की पत्रा पत्रिाकाओं की परम्परा वर्तमान संदर्भ के अध्ययन – इस प्रकार लोकतंत्रा में समाचार–पत्राों तथा पत्रिाकाओं का कापफी महत्व होता है। जब रेडियों, टेलिविजन का जोर नहीं था समाचार पत्राों–पत्रिाकाओं में छपे समाचार पढ़कर ही लोग देश–विदेश में घटित घटनाओं की जानकारी प्राप्त किया करते थे।
आज संस्कृत में कई सौ साहित्यिक एवं शोध पत्रिाकाएँ निकल रही है। इनमें से कुछ नियमित है, कुछ अनियमित है।

पत्रा पत्रिाकाएं: जबकि आज कल सोशल नेटवर्किंग का दौर है लोगों के हाथों में टेबलेट, मोबाईल, लैपटॉप सहित अन्य आधुनिक

उपकरणों के संचार की गति तीव्रता प्रदान कर रहा है। माध्यम के साथ अभिव्यक्ति का स्वरूप और भाषा बदल रही है ऐसे ही यदि कोई व्यक्ति या समूह बहुत पुरानी परम्परागत माध्यम द्वारा हाथ से लिखकर, पृष्ठसज्जा कर कार्टून बनाकर शिद्दत के साथ दीवारों पर जाकर अपने विचार को अभिव्यक्त करे तो निश्चित ही उत्सुकता का विषय बनता है। आखिर ये युवा ऐसा क्यों कर रहे हैं? ऐसे तमाम सवाल जहन में बरबस ही उमड़ पड़ते है विश्वविद्यालयों, पुस्तकालय, छात्रावासों सहित तमाम अन्य शैक्षणिक संस्थाओं की दीवारों पर लोगों की नजर जाती है यहां पर कुछ पाक्षिक, मासिक व अन्य समयावधि के पत्रा–पत्रिकाएं दिखाई देती हैं ऐसे में कुछ लोगों की आंखे कुछ देर तक इस पर टिकाकर कुछ समझते नजर आते है। समाचार पत्रा पत्रिकाओं की संख्या व पाठक वर्ग के इजापफा हुआ। यह विदित होता है कि संस्कृत भाषा में भी वह सब कुछ उपलब्ध हो जो विश्व की अन्य भाषाओं में आज युवा लेखक पहले की तुलना में कही अध्कि संस्कृत लिख पढ़ रहे हैं।

संदर्भ

1. प्रो. रमेश गौतम, पत्रा–पत्रिकाओं का इतिवृत और विकास, दिल्लीः विश्वविद्यालय विभाध्यक्ष दिल्ली
2. संस्कृत भाषा : इंटरनेट से लिया है।
3. https://him,wikipedia.org
4. प्रो. रामजी उपाध्याय : एम. ए. सागरिका, सागरमः विश्वविद्यालय (मध्य प्रदेश)
5. संस्कृत विमर्श :वदसपदम तौ/दकंण्अेदसण्दमजण्पद
6. केशव शर्मा, दिव्यज्योतिः, अंकः 3–4 दिनांक जनवरी 2008, पृ. सं. 1
7. प्रमुखसंरक्षका, जगद्दगुरु शंकराचार्य, भारती संस्कृत–मास पत्रिका।